वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 403
ISBN-978-93-82071-90-7

समवसरण मानस्तंभ विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

हस्तिनापुर में जन्मे तीर्थंकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव पद से समन्वित भगवान श्री शांतिनाथ के केवलज्ञानकल्याणक, पौष शु. दशमी-10 जनवरी 2014 के अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के अमृत महोत्सव 2013-14 के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	पौष शु. दशमी, 10 जनवरी 2014	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ऊँ नमो मंगलं कुर्यात् , ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन हैं। जिनेन्द्र देव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते–करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे दूध में घी विद्यमान है वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम को पाकर, पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

इनकी लेखनी से लिखा गया एक–एक शब्द मोती की माला के समान है। 365 दिनों में प्रायः सभी जगह पूज्य माताजी द्वारा रचित इन्द्रध्वज, शान्ति-विधान आदि होते ही रहते हैं।

यह ''समवसरण मानस्तंभ विधान'' जिसमें भगवान के समवसरण में स्थित मानस्तंभ की पूजा है, जिसके दर्शन से मान गलित होकर सम्यग्दर्शन प्रगट हो जाता है। यह विधान सभी के जीवन में सम्यग्दर्शन को प्राप्त करावे, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु को प्राप्त करें। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

''तीर्थं करोति इति तीर्थंकरः'' जो धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करते हैं वे तीर्थंकर कहलाते हैं। इस आर्यखण्ड में अनंत तीर्थंकर हो चुके, हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे, यह जैनागम हमें बताते हैं। प्रत्येक काल में तीर्थंकर चौबीस ही होते हैं जो विशाल राज्यसुख, साम्राज्य आदि अतुलित वैभव को छोड़कर सिद्धों की साक्षीपूर्वक स्वयमेव दीक्षा ले घोर तपश्चरण करके दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति करते हैं, उस समय इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर अर्धनिमिष मात्र में दिव्य समवसरण की रचना कर देता है। उस समवसरण की अचिन्त्य महिमा है, जहाँ तीर्थंकर भगवान कमलासन पर अधर विराजमान रहते हैं।

उस समवसरण में चारों दिशा में चार-चार चमत्कारी मानस्तंभ होते हैं, जिसमें चारों दिशाओं में जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं। इस समवसरण का दर्शन करते ही मानी का मान गलित होकर उसे सम्यक्त्वरूपी रत्न की प्राप्ति हो जाती है और उसकी पूजा-भक्ति भव्य प्राणी के संसार परिभ्रमण को ही समाप्त कर देती है। इसमें स्थित जिनप्रतिमाओं के दर्शन से क्षायिक सम्यक्त्व तक की प्राप्ति संभव है। भगवान महावीर के समवसरण में इसी मानस्तंभ के दर्शन से गौतम ब्राह्मण का मान गलित हो गया था और वे भगवान के प्रथम गणधर कहलाए थे। प्रत्येक तीर्थंकर के समवसरण में ये मानस्तंभ भगवान की ऊँचाई से बारह गुणे ऊँचे होते हैं, जो बारह योजन से दिखते हैं और बीस योजन तक अपना प्रकाश फैलाते हैं। चौबीस तीर्थंकरों के कुल छियानवे मानस्तंभ होते हैं।

पूज्य माताजी ने इस विधान के मंगलाचरण में लिखा है–

मानस्तंभों में चारों दिश, जिनप्रतिमाएं सुंदर शोभें।
गणधर मुनिगण सुरगण नमते, भविजन वंदे दुःख से छूटें।।
इनका वन्दनकर गौतम को, प्रभु का गणधर पद प्राप्त हुआ।
मैं नमूँ नमूँ नित श्रद्धा से, मेरा जीवन भी धन्य हुआ।।

ऐसे इस महिमाशाली मानस्तंभ का वर्णन हमें शास्त्र-पुराणों के आलोढन

से प्राप्त होता है परन्तु वर्तमान युग में जब किसी के पास शास्त्र-पुराणों के अध्ययन का समय नहीं है, ऐसे विषम समय में बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी के परम सौभाग्य से इस युग की विशल्या, साक्षात् शारदा स्वरूपा परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने 300 अमूल्य ग्रंथरूपी रत्नों को जैनशासन को प्रदान कर जैन समाज पर महान उपकार किया है। इस क्रम में जहाँ उन्होंने चतुरनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्तकर अध्यात्म, सिद्धान्त, छंद, व्याकरण, अलंकार, न्याय, भूगोल-खगोल आदि प्रत्येक विषयों पर अपनी लेखनी चलाई वहीं भक्तिमार्ग के क्षेत्र में अनेक वृहत् एवं लघु विधानों की रचना कर धर्म का जो शंखनाद किया है, भव्य प्राणियों को धर्म में अनुरक्त करने का जो स्तुत्य कार्य किया है, उस हेतु जिनशासन उनका चिरऋणी रहेगा। भक्ति विधान के उसी क्रम में उनकी यह कृति ''समवसरण मानस्तंभ विधान'' है, जिसमें तीर्थंकर भगवान के समवसरण और मानस्तंभ में विराजमान जिनप्रतिमाओं का अतीव जीवन्त चित्रण है, जिसका पाठ करते हुए प्राणी स्वयं को समवसरण में ही बैठा समझकर असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेगा। भक्ति में तन्मय करने वाले इस विधान में सर्वप्रथम समवसरण पूजा है, पुनः समवसरण मानस्तंभ विधान पूजा है, जिसमें कुल 96 अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य है। इस लघु किन्तु महिमाशाली विधान के द्वारा आप सभी सम्यग्दर्शन में और अधिक दृढ़तर होते हुए एक दिन साक्षात् समवसरण के दर्शन का लाभ प्राप्त करें और ऐसी अचिन्त्य महान कृतियों की प्रदात्री पूज्य माताजी आगामी भवों में कैवल्य अवस्था की प्राप्तिकर भव्यात्माओं को अपनी दिव्य अमृतवाणी का पान करावें, यही वीरप्रभू से मंगल कामना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जीतीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. समवसरण का वर्णन	1
2. मंगलाचरण	6
3. समवसरण पूजा	8
4. समवसरण मानस्तंभ पूजा	12
5. प्रशस्ति	34
6. समवसरण मानस्तंभ विधान की आरती	35
7. समवसरण चालीसा	36
8. समवसरण की आरती	38
9. समवसरण भजन	39
10. भजन	40

मण्डल का नक्शा

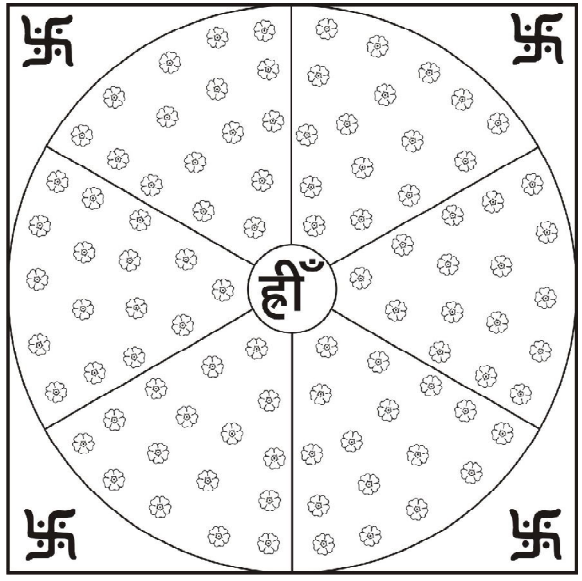

पूजा-2, कुल अर्घ्य-96, पूर्णार्घ्य-1, जयमाला-2

समवसरण का वर्णन

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय नमः

भगवान को केवलज्ञान प्रगट होते ही इन्द्र की आज्ञा से कुबेर अर्धनिमिष में समवसरण की रचना कर देता है। उस समय भगवान तीनों लोकों को और उनकी भूत, भावी, वर्तमान समस्त पर्यायों को युगपत् एक समय में जान लेते हैं।

भगवान शांतिनाथ का समवसरण पृथ्वी से 5000 धनुष (20000 हाथ) ऊपर आकाश में अधर है। पृथ्वी से एक हाथ ऊपर से एक-एक हाथ ऊँची बीस हजार सीढ़ियाँ हैं। इनसे चढ़कर मनुष्य और तिर्यंच आदि सभी भव्य जीव-बाल, वृद्ध, अंधे, लूले, लंगड़े, रोगी आदि अंतर्मुहूर्त (48 मिनट) में ऊपर पहुँच जाते हैं। भगवान ऋषभदेव का समवसरण 12 योजन (96 मील) का है। आगे घटते-घटते महावीर स्वामी का समवसरण एक योजन (8 मील) का है।

इसमें चार परकोटे और पाँच वेदियाँ हैं। इनके आठ भूमियाँ हैं। चारों दिशाओं में बहुत ही विस्तृत वीथी बड़ी-बड़ी गलियाँ हैं।

इस समवसरण में क्रम से पहले धूलिसाल परकोटा, चैत्यप्रासाद भूमि, वेदी, खातिकाभूमि, वेदी, लताभूमि, परकोटा, उपवनभूमि, वेदी, ध्वजभूमि, परकोटा, कल्पभूमि, वेदी, भवनभूमि, परकोटा, श्रीमण्डपभूमि और वेदी है। आगे 16 सीढ़ी ऊपर चढ़कर पहली कटनी, 8 सीढ़ी चढ़कर दूसरी कटनी, पुनः 8 सीढ़ी चढ़कर तीसरी कटनी है। इसी पर भगवान विराजमान हैं।

प्रत्येक परकोटे और वेदियों में चारों दिशाओं में एक-एक गोपुर द्वार हैं। जिनमें से पूर्वदिशा में "विजय", दक्षिण में "वैजयंत" पश्चिम में "जयंत" और उत्तर में "अपराजित" ऐसे नाम हैं। इन चारों के उभय पार्श्व में दो-दो नाट्यशालाएं हैं, जिनमें देवांगनाएं भगवान की भक्ति में विभोर हो नृत्य-गान करती रहती हैं। वहाँ द्वारों के दोनों और नवनिधि, मंगलघट और धूपघट आदि स्थित हैं। प्रत्येक परकोटे के द्वारों पर देवगण हाथ में दण्ड, मुद्गर आदि लेकर रक्षक बनकर खड़े हुए हैं।

24 तीर्थंकरों के समवसरण का प्रमाण

1.	भगवान ऋषभदेव का समवसरण	12 योजन (96 मील)
2.	भगवान अजितनाथ का समवसरण	$11\frac{1}{2}$ योजन (92 मील)
3.	भगवान संभवनाथ का समवसरण	11 योजन (88 मील)
4.	भगवान अभिनंदननाथ का समवसरण	$10\frac{1}{2}$ योजन (84 मील)
5.	भगवान सुमतिनाथ का समवसरण	10 योजन (80 मील)
6.	भगवान पद्मप्रभु का समवसरण	$9\frac{1}{2}$ योजन (76 मील)
7.	भगवान सुपार्श्वनाथ का समवसरण	9 योजन (72 मील)
8.	भगवान चंद्रप्रभ का समवसरण	$8\frac{1}{2}$ योजन (68 मील)
9.	भगवान पुष्पदंतनाथ का समवसनण	8 योजन (64 मील)
10.	भगवान शीतलनाथ का समवसरण	$7\frac{1}{2}$ योजन (60 मील)
11.	भगवान श्रेयांसनाथ का समवसरण	7 योजन (56 मील)
12.	भगवान वासुपूज्यनाथ का समवसरण	$6\frac{1}{2}$ योजन (52 मील)
13.	भगवान विमलनाथ का समवसरण	6 योजन (48 मील)
14.	भगवान अनंतनाथ का समवसरण	$5\frac{1}{2}$ योजन (44 मील)
15.	भगवान धर्मनाथ का समवसरण	5 योजन (40 मील)
16.	भगवान शांतिनाथ का समवसरण	$4\frac{1}{2}$ योजन (36 मील)
17.	भगवान कुंथुनाथ का समवसरण	4 योजन (32 मील)
18.	भगवान अरनाथ का समवसरण	$3\frac{1}{2}$ योजन (28 मील)
19.	भगवान मल्लिनाथ का समवसरण	3 योजन (24 मील)

20. भगवान मुनिसुव्रतनाथ का समवसरण $2\frac{1}{2}$ योजन (20 मील)
21. भगवान नमिनाथ का समवसरण 2 योजन (16 मील)
22. भगवान नेमिनाथ का समवसरण $1\frac{1}{2}$ योजन (12 मील)
23. भगवान पार्श्वनाथ का समवसरण $1\frac{1}{4}$ योजन (10 मील)
24. भगवान महावीर स्वामी का समवसरण 1 योजन (8 मील)

समवसरण में प्रवेश करते ही चारों गली में दिव्य रत्नमय मानस्तंभ हैं जो कि भगवान से बारहगुने ऊँचे हैं। जैसे कि– भगवान शांतिनाथ के शरीर की ऊँचाई 160 हाथ है अतः ये बारहगुणे अर्थात् 160×12=1920 हाथ ऊँचे हैं। बीस योजन तक प्रकाश फैलाते हैं। इनके दर्शन से मानी का मान गलित हो जाता है और वह भव्यात्मा सम्यग्दृष्टि बनकर अनंत संसार को सीमित कर लेता है।

केवली भगवान के प्रभाव से चारों तरफ चार सौ कोस तक सुभिक्षता, हिंसा और उपसर्गादि का अभाव, सभी जन्मजात शत्रु-सिंह, हिरण आदि का आपस में मैत्री भाव, छहों ऋतुओं के फल-फूलों का एक साथ आ जाना आदि अतिशय हो जाते हैं।

भगवान के श्रीविहार में आकाश में अधर, उनके चरण के नीचे देवगण स्वर्णमय सुगंधित दिव्य कमलों को रचते जाते हैं और अहिंसा धर्म के दिग्विजय को सूचित करता हुआ 'धर्मचक्र' भगवान के आगे-आगे चलता है एवं सरस्वती-लक्ष्मी देवी आजू-बाजू में चलती हैं। आकाशगामी ऋद्धिधारी साथ में चलते हैं, असंख्य देव-देवियाँ, इन्द्रादिगण पीछे-पीछे चलते हैं एवं साधारण मुनि, आर्यिकाएं, मनुष्य, पशु आदि नीचे-नीचे चलते हैं। जहाँ भगवान रुक जाते हैं वहाँ पुनः कुबेर समवसरण की रचना कर देता है।

समवसरण में आठ भूमि और तीन कटनी

1. पहली ''चैत्यप्रासादभूमि'' है, इसमें एक-एक जिनमंदिर के अंतराल में पांच-पांच प्रासाद हैं।

2. दूसरी ''खातिकाभूमि'' है, इसके स्वच्छ जल में हंस आदि कलरव कर रहे हैं और कमल आदि पुष्प खिले हैं।

3. तीसरी ''लताभूमि'' है, इसमें छहों ऋतुओं के पुष्प खिले हुए हैं।

4. चौथी ''उपवनभूमि'' है, इसमें पूर्व आदि दिशा में क्रम से अशोक,

सप्तच्छद, चंपक और आम्र के वन हैं। प्रत्येक वन में एक-एक चैत्यवृक्ष हैं जिनमें 4-4 जिनप्रतिमाएं विराजमान हैं। प्रत्येक प्रतिमाओं के सामने एक-एक मानस्तंभ हैं।

5. पांचवी ''ध्वजाभूमि'' है, इसमें सिंह, गज, वृषभ, गरुड़, मयूर, चन्द्र, सूर्य, हंस, पद्म और चक्र इन दस चिन्हों से सहित महाध्वजाएं और उनके आश्रित लघुध्वजाएं 108-108 हैं। सब मिलाकर 4,70,880 हैं।

6. छठी ''कल्पभूमि'' है, इसमें भूषणांग आदि दस प्रकार के कल्पवृक्ष हैं। चारों दिशा में क्रम से नमेरु, मंदार, संतानक और पारिजात ऐसे एक-एक सिद्धार्थवृक्ष हैं। इनमें चार-चार सिद्धप्रतिमाएं विराजमान हैं ।

7. सातवीं ''भवनभूमि'' में भवन बने हुए हैं। इस भूमि के पार्श्व भागों में अर्हंत और सिद्धप्रतिमाओं से सहित नौ-नौ स्तूप हैं।

8. आठवीं ''श्रीमण्डपभूमि'' है, इसमें 16 दीवालों के बीच में 12 कोठे हैं जिनमें 1. गणधरादि मुनि, 2. कल्पवासिनी देवी, 3. आर्यिका और श्राविका, 4. ज्योतिषी देवी, 5. व्यंतर देवी, 6. भवनवासिनी देवी, 7. भवनवासी देव, 8. व्यंतर देव, 9. ज्योतिष देव, 10. कल्पवासी देव, 11. चक्रवर्ती आदि मनुष्य और 12. सिंहादि तिर्यंच, ऐसे बारहगण के असंख्यातों भव्यजीव बैठकर धर्मोपदेश सुनते हैं। वहां पर रोग, शोक, जन्म, मरण, उपद्रव आदि बाधाएं नहीं हैं।

प्रथम कटनी पर पूजा द्रव्य एवं मंगल द्रव्य रखे हुए हैं। इसी प्रथम कटनी पर चारों दिशाओं में यक्षेन्द्र अपने मस्तक पर धर्मचक्र धारण किये हुए हैं।

द्वितीय कटनी पर सिंह, बैल, कमल, चक्र, माला, गरुड़ और हाथी इन आठ चिन्हों से युक्त महाध्वजाएं हैं तथा धूपघट, नवनिधियाँ, पूजन द्रव्य एवं मंगलद्रव्य स्थित हैं।

तृतीय कटनी पर गंधकुटी में सिंहासन पर लाल कमल की कर्णिका पर भगवान शांतिनाथ चार अंगुल अधर विराजमान हैं। इनका मुख एक तरफ होते हुए भी चारों तरफ दिखने से ये चतुर्मुखी ब्रह्मा कहलाते हैं। भगवान के पास अशोकवृक्ष, तीन छत्र, सिंहासन, भामंडल, चौंसठ चंवर, सुरपुष्पवृष्टि, दुंदुभि बाजे और हाथ जोड़े सभासद ये आठ महाप्रातिहार्य हैं। सभी समवसरण में उन-उन तीर्थंकर के शासन देव-देवी विद्यमान हैं। जैसे कि भगवान शांतिनाथ के

समवसरण में गरुड़ यक्ष और महामानसी यक्षी विद्यमान हैं।

श्री शांतिनाथ भगवान को मेरा अनंतबार नमस्कार हो।

इस समवसरण का वर्णन तिलोयपण्णत्ति, हरिवंशपुराण और समवसरण स्तोत्र के आधार से हैं।

इस समवसरण मानस्तंभ विधान में चौबीसों तीर्थंकरों के समवसरण में प्रथम भूमि की वीथी में स्थित मानस्तंभों की पूजा है।

समवसरण मानस्तंभ विधान

मंगलाचरण

–अनुष्टुप् छंद–

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।1।।

चतुर्विंशतितीर्थेशान्, तेषां दिव्यसभा नुमः।
ते सर्वे ताः सभाश्चापि, नित्यं कुर्वन्तु मंगलम्।।2।।

तीर्थकृत्समवसृतौ, जिनबिंबसमन्विताः।
मानस्तंभाश्चतुर्दिक्षु, ते मे कुर्वन्तु मंगलम्।।3।।

–स्रग्धरा छंद–

मानस्तंभाः सरांसि, प्रविमल–जल–सत्खातिका–पुष्पवाटी।
प्राकारो नाट्यशालाद्वितयमुपवनं वेदिकांतर्ध्वजाद्याः।।
शालः कल्पद्रुमाणां, सुपरिवृत–वनं स्तूप–हर्म्यावली च।
प्राकारः स्फाटिकोन्त–र्नृसुर–मुनिसभा पीठिकाग्रे स्वयंभूः।।4।।

–शंभुछंद–

चौबिस तीर्थंकर वंदन कर, उन प्रभु के समवसरण प्रणमूं।
प्रभु समवसरण में चारों दिश, मानस्तंभों को नित्य नमूं।।
मानस्तंभों में चारों दिश, जिनवर प्रतिमा को कोटि नमूं।
जिनप्रतिमा को वंदन कर–कर, क्षायिक सम्यक्त्व सदा प्रणमूं।।5।।

एकेक प्रभू के चार–चार, हैं मानस्तंभ चमत्कारी।
चौबिस प्रभु के छ्यानवे कहे, ये सब अतिशायि सौख्यकारी।।
मानी का मान गलित करते, सम्यक्त्व रत्न को देते हैं।
इनकी पूजा करते जो जन, संसार भ्रमण हर लेते हैं।।6।।

मानस्तंभों में चारों दिश, जिनप्रतिमायें सुंदर शोभें।
गणधर मुनिगण सुरगण नमते, भविजन वंदें दुःख से छूटें।।
इनका वंदन कर गौतम को, प्रभु का गणधर पद प्राप्त हुआ।
मैं नमूं नमूं नित श्रद्धा से, मेरा जीवन भी धन्य हुआ।।7।।

–दोहा–

मानस्तंभ विधान यह, सुखसंपति दातार।
सर्व अमंगल दूर कर, नित नव मंगलकार।।8।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

पूजा नं.–1

समवसरण पूजा

अथ स्थापना–नरेन्द्र छंद

चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के, समवसरण में शोभें।
आठ भूमियाँ सुदंर उसमें, पहली के वीथी में।।
तीर्थंकर ऊँचाई से ये, बारह गुणिते ऊँचे।
मानस्तंभ बने अतिसुंदर, समवसरण को पूजें।।1।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–भुजंगप्रयात छंद

पयोराशि को नीर निर्मल भराके।
करूँ धार जिनपाद भक्ती बढ़ाके।।
समवसरण पूजूं भवातापहारी।
सु चौबीस ये तीर्थंकर सौख्यकारी।।1।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसा गंध केशर लिया पात्र में है।
चरण चर्चते नाथ के सौख्य हो है।।समवसरण.।।2।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले शालि तंदुल भरा थाल लाया।
चढ़ा पुंज सन्मुख प्रभू को रिझाया।।समवसरण.।।3।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही केवड़ा मल्लिका मोगरा ले।
चढ़ाऊँ चरण में सुगुण कीर्ति फैले।।
समवसरण पूजूं भवातापहारी।
सुचौबीस ये तीर्थंकर सौख्यकारी।।4।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जलेबी इमरती पुआ पात्र भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें स्वात्मसुख हेतु रुचि से।।समवसरण.।।5।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजत पात्र में दीप घृत का जलाऊँ।
करूँ आरती मोह तम को भगाऊँ।।समवसरण.।।6।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांगी सुरभि धूप खेऊँ अगनि में।
जले कर्म सब धूम्र फैले गगन में।।समवसरण.।।7।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस संतरा आम अंगूर लाऊँ।
मधुर फल प्रभो आपको मैं चढ़ाऊँ।।समवसरण.।।8।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादी वसू द्रव्य ले अर्घ कीना।
चढ़ाऊँ तुम्हें हों अशुभ कर्म छीना।।समवसरण.।।9।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

सीतानदि को नीर, सुवरण झारी में भरूँ।
मिले भवोदधि तीर, शांतिधारा त्रय किये।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला वकुल गुलाब, चंप चमेली ले घने।
पुष्पांजलि को आप, चरण चढ़ाते यश बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पाँजलिः।

जाप्य—**ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–सोरठा –

तीर्थंकर मुनिनाथ, अतुल गुणों के तुम धनी।
नमूँ नमाकर माथ, गाऊँ गुणमणिमालिका।।1।।

–नरेन्द्र छंद –

जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, गणधर मुनिगण वंदे।
जय जय समवसरण परमेश्वर, वंदत मन आनंदे।।
प्रभु तुम समवसरण अतिशायी, धनपति रचना करते।
बीस हजार सीढ़ियों ऊपर, शिला नीलमणि धरते।।2।।

धूलिसाल परकोटा सुंदर, पंचवर्ण रत्नों के।
मानस्तंभ चार दिश सुंदर, अतिशय ऊँचे चमकें।।
उनके चारों दिशी बावड़ी, जल अति स्वच्छ भरा है।
आसपास के कुंड नीर में, पग धोती जनता है।।3।।

प्रथम चैत्यप्रासाद भूमि में, जिनगृह अतिशय ऊँचे।
खाई लताभूमि उपवन में, पुष्प खिलें अति नीके।।
वनभूमी के चारों दिश में, चैत्यवृक्ष में प्रतिमा।
कल्पभूमि सिद्धार्थ वृक्ष को, नमूँ नमूँ अति महिमा।।4।।

ध्वजा भूमि की उच्च ध्वजाएँ, लहर लहर लहरायें।
भवनभूमि के जिनबिम्बों को, हम नित शीश झुकायें।।
श्रीमंडप में बारह कोठे, मुनिगण सुरनर बैठे।
पशुगण भी उपदेश श्रवण कर, शांतचित्त वहाँ बैठे।।5।।

गणधर गुरुवर मुनिगण लाखों, चौबीसों जिनवर के।
गणिनी मात आर्यिकायें भी, समवसरण में बैठें।।

श्रावक और श्राविका, लाखों वहां प्रभू भक्तीरत।
असंख्यात थे देव देवियाँ, सिंहादिक बहु तिर्यक्।।6।।

गंधकुटी के मध्य सिंहासन, जिनवर अधर विराजें।
प्रातिहार्य की शोभा अनुपम, कोटि सूर्य शशि लाजें।।
सौ इन्द्रों से पूजित जिनवर, त्रिभुवन के गुरु मानें।
नमूँ नमूँ मैं हाथ जोड़कर, मेरे भवदुःख हानें।।7।।

–दोहा–

चिन्मय चिंतामणि प्रभो! चिंतित फल दातार।
ज्ञानमती सुख संपदा, दीजे निजगुण सार।।8।।

शरणागत के सर्वथा, तुम रक्षक भगवान।
त्रिभुवन की अविचल निधी, दे मुझ करो महान।।9।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

जो भव्य प्रभु समवसरण की अर्चना करें।
संपूर्ण अमंगल व रोग, शोक, दुख हरें।।
निज आत्म के गुणों को संचित किया करें।
'सज्ज्ञानमती' से ही, जीवन सफल करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.–2

समवसरण मानस्तंभ पूजा

अथ स्थापना–नरेन्द्र छंद

धूलिसाल के अभ्यंतर में चारों दिश वीथी में।
मानस्तंभ रत्नमणि निर्मित शोभें चारों दिश में।।
उनमें चारों दिश जिनप्रतिमा भक्ति भाव से वंदूँ।
आह्वानन कर पूजन करके कर्म शत्रु को खंडूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितमानस्तम्भजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितमानस्तम्भजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितमानस्तम्भजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–नरेन्द्र छंद

नंदा वापी का निर्मल जल, कंचन भृंग भराऊँ।
श्री जिनवर के चरण कमल में, धारा तीन कराऊँ।।
मानस्तंभ चार दिश में भी, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, आठों मद से छूटूं।।1।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिंबेभ्य जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में चर्चूं, निजानंद सुख पाऊँ।।मान.।।2।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिंबेभ्य चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम उज्ज्वल तंदुल ले, तुम ढिग पुंज रचाऊँ।
अमल अखंडित सुख से मंडित, निज आतमपद पाऊँ।।मान.।।3।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण की लता भूमि से, सुरभित पुष्प चुनाऊँ।
जिनवर चरण कमल में अर्पूं निजगुण यश विकसाऊँ।।
मानस्तंभ चार दिश में भी, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुख सुधा पान कर, आठों मद से छूटूं।।4।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतपिंड सदृश चरु ताजे, घेवर मोदक लाऊँ।
जिनवर आगे अर्पण करते सब दुख व्याधि नशाऊँ।।मान.।।5।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृप दीपक में ज्योति जलाकर, करुँ आरती भगवन्।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञान ज्योति उद्योतन।।मान.।।6।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगरु तगर चंदन से मिश्रित धूप सुगंधित लाऊँ।
अशुभ कर्म को दग्ध करूँ मैं अग्नी संग जलाऊँ।।मान.।।7।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरस फल लाके थाल भराऊँ।
जिनवर सन्निध अर्पण करते परमानंद सुख पाऊँ।।मान.।।8।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिंबेभ्य फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि आदिक अर्घ बनाऊँ।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं तीन रत्न निज पाऊँ।।।।मान.।।9।।

ॐ ह्रीं समवसरणस्थितमानस्तम्भविराजमानजिनबिंबेभ्यअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

पद्म सरोवर नीर से, जिनवर पद अरविंद।
त्रयधारा विधि से करूँ, हो सुख शांति अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जुही गुलाब सुगंधियुत, वर्ण वर्ण के फूल।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अनुकूल।।11।।

दिव्य पुष्पाँजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–सोरठा–

जिनवर चरण सरोज, पुष्पांजलि से पूजते।
मिटें सर्व दुख शोक, सुख संपति होवे सदा।।1।।

।।इति मण्डलस्योपरि मानस्तम्भेषु पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

–रोला छंद–

वृषभदेव के समवसरण में चारों दिश में।
वीथी दो दो कोश चौड़ी उन पूरब में।।
मानस्तंभ अपूर्व, चारों दिश जिनप्रतिमा।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, होवे सौख्य अनुपमा।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में दक्षिण दिश में शोभ रहा है।
मानस्तंभ विचित्र मुनिगण पूज्य कहा है।।
उसमें शिखर समीप चहुँदिश जिनप्रतिमायें।
पूजूँ अर्घ समर्प्य अनुपम सौख्य दिलायें।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश की महा, गलि में रत्नविनिर्मित।
मानस्तंभ जिनेश, का मिथ्यात्वी मदहृत्।।उसमें.।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश में तुंग, मानस्तंभ विराजे।
जो वंदें धर प्रीत उनके पातक भाजें।।उसमें.।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभदेवसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ जिनदेव, समवसरण में राजें।
पूरब दिश में तुंग मानस्तंभ विराजें।।
उसमें शिखर समीप चहुँदिश जिनप्रतिमायें।
पूजूँ अर्घ समर्प्य अनुपम सौख्य दिलायें।।5।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश में श्रेष्ठ मानस्तंभ अपूरब।
बारहगुणा जिनेश, तनु से तुंग रतनप्रभ।।उसमें.।।6।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश में तुंग, मानस्तंभ दिखे है।
सुरपति नरपति वंद्य कांतीमान दिपे है।।उसमें.।।7।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में उत्तर दिश में महा गली में।
मानस्तंभ सुरत्न मणिमय शोभे जग में।।उसमें.।।8।।

ॐ ह्रीं अजितनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

श्री संभव जिनराज का, समवसरण जगवंद्य।
मानस्तंभ सुपूर्व दिशि, पूजूँ जिनवर बिंब।।9।।

ॐ ह्रीं संभवजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में दक्षिणी, दिश में मानस्तंभ।
अग्रभाग में चहुँ दिशी, पूजूँ जिनवर बिंब।।10।।

ॐ ह्रीं संभवजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में अपर दिशि, मानस्तंभ अपूर्व।
शिखर भाग में चहुँ दिशी, पूजूँ जिनवर सूर्य।।11।।

ॐ ह्रीं संभवजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशि मुनिनाथनुत, मानस्तंभ महान।
शिखर भाग जिनबिंब को, जजूं जोड़ जुग पान।।12।।

ॐ ह्रीं संभवजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन जिनराज का, समवसरण गुणखान।
पूरब मानस्तंभ को जजूं, मिले सुखखान।।13।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में दक्षिणी, दिश में मानस्तंभ।
शिखर भाग में चहुँदिशी, पूजूँ जिनवर बिंब।।14।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में अपरदिशि, मानस्तंभ अनिंद्य।
चहुँदिश के जिनबिंब को, पूजूँ सुर नर वंद्य।।15।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में उत्तरी दिश में मानस्तंभ।
चहुंदिश के जिंनबिंब को जजूं हरूँ जग दंभ।।16।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई-

सुमतिनाथ की सभा अनिंद्य, समवसरण है त्रिभुवनवंद्य।
पूर्वदिशा में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।17।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण सब दुख हरतार, पूजत ही सब भरे भंडार।
दक्षिण दिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।18।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में बारह सभा, मुनिगण गाते जिनगुणकथा।
पश्चिमदिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।19।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रनील मणि से बन रही, कमलाकार सभा शुभ कही।
उत्तरदिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।20।।

ॐ ह्रीं सुमतिनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभूजिन गुणमणि भरे, उनका समवसरण मन हरे।
पूरबदिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।21।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में भूमी आठ, दर्शन से हो मंगल ठाठ।
दक्षिण दिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।22।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण सब सुख दातार, पूजत भरते गुण भंडार।
पश्चिमदिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।23।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण अभिराम, नित्प्रति शत शत करूँ प्रणाम।
उत्तरदिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।24।।

ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वजिन त्रिभुवन ईश, समवसरण को नाऊँ शीश।
पूरबदिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।25।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में कोट उतुंग, पहरा देते नित सुरवृंद।
दक्षिणदिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।26।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनद रचित जिनसभा अपूर्व, गणधर कहें अंगअरु पूर्व।
पश्चिम दिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।27।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में वेदी पाँच, चार कोट भू आठ विभांत।
उत्तरदिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।28।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदाप्रभु जिनकी शुभ सभा, हरती भक्तजनों की व्यथा।
पूरब दिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।29।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण का नाम पवित्र, करता शत्रुगणों को मित्र।
दक्षिणदिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।30।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण भवदधि का कूल, पूजत ही सब हों अनुकूल।
पश्चिम दिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।31।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर समवसरण जगवंद्य, वहाँ रहें सुरनर पशुवृन्द।
उत्तरदिश में मानस्तंभ, जजूं चतुर्दिश के जिनबिंब।।32।।

ॐ ह्रीं चंद्रप्रभजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पद्धड़ी छंद–

श्री पुष्पदंत का समवसर्ण, वंदन से नशता जन्म मर्ण।
पूरबदिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।33।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में गली चार, सीढ़ी उनमें बीसहिं हजार।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।34।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में मुनि वसंत, जिन धुनि सुन करते कर्म अंत।
पश्चिम दिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।35।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण रचता कुबेर, बस अर्ध निमिष नहिं लगे देर।
उत्तर दिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।36।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनका जो समवसरण, सब भव्यों को दे रहा शरण।
पूरब दिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।37।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस समवसरण में तीर्थनाथ, करते सब भक्तों को सनाथ।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।38।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो समवसरण में तरु अशोक, भव्यों का हरता सर्व शोक।
पश्चिम दिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।39।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल की धुनि शीतल करंत, भवताप हरे मंगल भरंत।
उत्तर दिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।40।।

ॐ ह्रीं शीतलजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ का समवसर्ण, गणधर मुनिगण भी लेय शर्ण।
पूरबदिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।41।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में प्रातिहार्य, भक्तों के पूरण करें कार्य।
दक्षिणदिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।42।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामंडल छवि का अति प्रकाश, लजते करोड़ सूरज प्रकाश।
पश्चिमदिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।43।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर पुष्पवृष्टि निशदिन करंत, जय जय ध्वनि करते हर्षवंत।
उत्तरदिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।44।।

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वासुपूज्य सुरवृन्द्र पूज्य, उन समवसरण अतिशय विशुद्ध।
पूरब दिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।45।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ऊपर चौंसठ चमर स्वच्छ, ढोरें नित चौंसठ देवयक्ष।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।46।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन रत्न जड़ा विचित्र, नित अधर विराजें जिन पवित्र।
पश्चिमदिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।47।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाजे साढ़े बारह करोड़, दुंदुभि बाजे बजते अजोड़।
उत्तरदिशि मानस्तंभ एक, जिनप्रतिमा पूजूँ माथ टेक।।48।।

ॐ ह्रीं वासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

जिन विमलनाथ का समवसरण, है अमल अखंड सौख्यदाता।
उसमें नवनिधियां भरी पड़ीं, बहु वैभव कोइ न कह पाता।।

जिनवर से बारह गुणा तुंग, पूरब दिश मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।49।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में धूप घटों, में सुरगण धूप खेवते हैं।
सुरभित चारों दिशि धुआं उड़े, भवि जिनपद कंज सेवते हैं।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, दक्षिण दिशि मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।50।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में गोपुर के दोनों तरफी नाटकशाला।
वहाँ देव अप्सरा नृत्य करें, गावें नित प्रति जिन गुणमाला।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, पश्चिम में मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।51।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस्तंभों के चारों दिश, वापी के सन्निध कुंड बने।
उनमें जन पैर धूलि धोकर, अंदर प्रवेश कर पाप हनें।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, उत्तर दिश मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।52।।

ॐ ह्रीं विमलनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अनंत का समवसरण, दर्शन से अंतक[1] भय हरता।
जिनगुण अनंत प्रगटित करके, भव्यों के गुण विकसित करता।।

---

1. मृत्यु का।

जिनवर से बारह गुणा तुंग, पूरब दिशि मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में आठ द्रव्य, मंगलमय बहुत जगत रहते।
दर्शकजन का मंगल करते, चहुंदिशी अमंगल को हरते।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, दक्षिण दिशि मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।54।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो समवसरण में जिन दर्शन, करते वे भव्य कहाते हैं।
वे निश्चित ही उस भव या कुछ, भव लेकर शिवश्री पाते हैं॥
जिनवर से बारह गुणा तुंग, पश्चिम दिशि मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।55।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में मिथ्यात्वी, अभिमानी क्षुद्र न जा सकते।
जो सम्यग्दृष्टी होते हैं, वे ही जिनवर दर्शन करते।।
जिनवर से बारह गुणा तुंग, उत्तर दिशि मानस्तंभ बना।
उसमें चारों दिश जिनप्रतिमा, मैं पूजूँ मन आनंद घना।।56।।

ॐ ह्रीं अनंतनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ के समवसरण में ध्वनि खिरती नित[1] चार बार।
वह धर्मामृत बरसा करके, भव्यों को तृप्त करे अपार।।

1. अर्धरात्रि में भी खिरती है ऐसा किन्हीं ग्रंथों में है।

गणधर व इंद्र चक्रेश्वर के प्रश्नों से अन्य समय खिरती।
पूरबदिश मानस्तंभ जजूँ, जिनपूजा सब इच्छित फलती।।57।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में गणधर मुनि, जिनवरध्वनि का विस्तार करें।
फिर द्वादशांग में गूँथ गूंथ, कहते मुनिगण कंठाग्र करें।।
जिन वचनामृत को पी-पीकर द्वादश गण को शांती मिलती।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ जजूं, जिनपूजा मनवांछित फलती।।58।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण की वापी के, जल में भवि निज भव देखे हैं।
भामंडल में निज सात भवों, को देख भवों से छूटे हैं।।
जिन वचनामृत को पी-पीकर भव्यो को सुख शांती मिलती।
पश्चिम दिशि मानस्तंभ जजूं, जिनपूजा मनवांछित फलती।।59।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण अद्भुत रचना, इन्द्राज्ञा से धनपति रचता।
वहं मानस्तंभ के दर्शन से, अभिमानी का सब मद गलता।।
जिनवर सन्निध का ही प्रभाव, अन मानस्तंभ में नहिं शक्ती।
उत्तर दिशि मानस्तंभ जजूं, जिनपूजा मनवांछित फलती।।60।।

ॐ ह्रीं धर्मनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ का समवसरण, भक्तों की भव भव दाह हरे।
जिननाम मंत्र भी भव्यों को, आत्यंतिक शांति प्रदान करे।।
जो समवसरण की भक्ति करें, उनकी सब बाधायें टलतीं।
पूरब दिशि मानस्तंभ जजूं, जिनपूजा मनवांछित फलती।।61।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण का ही प्रभाव, सौ-सौ योजन दुर्भिक्ष टले।
सब ईति भीति मारी संकट, नहिं होवे जहँ जिनराज चलें।।
सब ऋतु के भी फल फूल फलें, असमय में भी कलियां खिलतीं।
दक्षिण दिशि मानस्तंभ जजूं, जिनपूजा मनवांछित फलती।।62।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस मारग से हो श्रीविहार[1], वहाँ बहुत दिनों तक शांति रहे।
नहिं कष्ट उपद्रव दुर्घटना, सब रोग शोक दुख शांत रहे।।
सब क्रूर मनुजगण पशुगण के, भी आपस में मैत्री बनती।
पश्चिम दिशि मानस्तंभ जजूं, जिनपूजा मनवांछित फलती।।63।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन संनिध में सौधर्म इन्द्र, किंकर बन जिनआज्ञा पाले।
जहँ जहँ प्रभु का हो श्रीविहार, वह शीघ्र व्यवस्था कर डाले।।
इससे वह इक ही भव धरता, जिनभक्ती है अमोघ[3] शक्ती।
उत्तर दिशि मानस्तंभ जजूँ, जिनपूजा मनवांछित फलती।।64।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद–

श्री कुंथुनाथ जिनवर का, है समवसरण अतिनीका।
मानस्तंभ पूरब दिश में, पूजूँ जिनप्रतिमा नित मैं।।65।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतु-र्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण अति सुन्दर, नित भक्ती करें पुरन्दर[2]।
मानस्तंभ दक्षिण दिश में, पूजूँ जिनप्रतिमा नित मैं।।66।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अरहंतदेव का विहार। 2. हरिवंशपुराण में। 3. जो कभी व्यर्थ नहीं जाती है। 4. इन्द्र

जिन समवसरण की महिमा, गणधर मुनि गाते गरिमा।
मानस्तंभ पश्चिम दिश में, पूजूँ जिनप्रतिमा नित मैं।।67।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण अतिशायी, गुण गावें मन हरषायी।
मानस्तंभ उत्तर दिश में, पूजूँ जिनप्रतिमा नित मैं।।68।।

ॐ ह्रीं कुंथुनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरनाथ अरी को नाशा, निज केवलज्ञान प्रकाशा।
उन समवसरण पूरब में, शुभ मानस्तंभ जजूँ मैं।।69।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण में आओ, अतिशायी पुण्य कमाओ।
वीथी में दक्षिण दिश में, शुभ मानस्तंभ जजूँ मैं।।70।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन को शरणप्रदाता, जिन समवसरण सुखदाता।
अति सुन्दर पश्चिम दिशि में, शुभ मानस्तंभ जजूँ मैं।।71।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं समवसरण में बाधा, नहिं निद्रा प्यास न क्षुधा।
अतिशयकर उत्तर दिश में, शुभ मानस्तंभ जजूँ मैं।।72।।

ॐ ह्रीं अरनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भवविजयी, उन समवसरण सुखप्रदयी।
पूरब दिशि मानस्तंभ में, जिनप्रतिमा पूजूँ नित मैं।।73।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसमवसरण भव अंतक, पूजक होते दुख वंचक।
दक्षिण दिश मानस्तंभ में, जिनप्रतिमा पूजूँ नित मैं।।74।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपदेश सभा जिनवर की, है गोल चतुर्मुख जिनकी।
पश्चिम दिश मानस्तंभ में, जिनप्रतिमा पूजूँ नित मैं।।75।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो काम मोह यम विजयी, वे मल्लिनाथ भवविजयी।
उत्तर दिश मानस्तंभ में, जिनप्रतिमा पूजूँ नित मैं।।76।।

ॐ ह्रीं मल्लिनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिनवर व्रतधर, उन समवसरण सब दुखहर।
अपूरब पूरब दिशि में, जिन मानस्तंभ जजूँ मैं।।77।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण अभिरामा, सब भक्त लहें निजधामा।
दक्षिण दिश की वीथी में, जिन मानस्तंभ जजूँ मैं।।78।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण की शोभा, देवों का भी मन लोभा।
पश्चिम दिश की वीथी में, जिन मानस्तंभ जजूँ मैं।।79।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन समवसरण अतिशयभृत, सब रिद्धि सिद्धि नवनिधि कृत।
उत्तर दिश की वीथी में, जिन मानस्तंभ जजूँ मैं।।80।।

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

नमिजिन जग परमेश, समवसरण अतिशय घना।
पूजूँ भक्ति समेत, पूरब मानस्तंभ को।।81।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवदधि तारन सेतु, समवसरण अतिरम्य है।
पूजूँ भक्ति समेत, दक्षिण मानस्तंभ को।।82।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शक जन सुखहेत, समवसरण जिनराज का।
पूजूँ भक्ति समेत, पश्चिम मानस्तंभ को।।83।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सींचे भविजन खेत, जिनवच की वर्षा करें।
पूजूँ भक्ति समेत, उत्तर मानस्तंभ को।।84।।

ॐ ह्रीं नमिनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमीनाथ जिनेश, समवसरण धनपति रचा।
पूजूँ भक्ति समेत, पूरब मानस्तंभ को।।85।।

ॐ ह्रीं नेमीनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन आनंद हेत, राजमती आर्या वहाँ।
पूजूँ भक्ति समेत, दक्षिण मानस्तंभ को।।86।।

ॐ ह्रीं नेमीनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर वंदन हेत, समवसरण शोभे अती।
पूजूँ भक्ति समेत, पश्चिम मानस्तंभ को।।87।।

ॐ ह्रीं नेमीनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पावन हेतु, समवसरण अतिशुद्ध है।
पूजूँ भक्ति समेत, उत्तर मानस्तंभ को।।88।।

ॐ ह्रीं नेमीनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद–

पार्श्वनाथ ने कमठ उपद्रव, जीत घाति अरि नाशा।
पद्मावति धरणेन्द्र देव ने, सब उपसर्ग विनाशा।।
केवलज्ञान सूर्य के उगते, समवसरण क्षण भर में।
मानस्तंभ पूर्वदिश का मैं, पूजूँ रुचि धर मन में।।89।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाशील प्रभु महामना हो, बहु उपसर्ग सहा है।
संकटमोचन अतः भव्य के, ऋषि ने यही कहा है।।
पद्मावति शासन देवी का, मान बढ़ा इस युग में।
मानस्तंभ दक्षिणी दिश का, पूजूँ रुचि धर मन में।।90।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण की शोभा न्यारी, जगह जगह बावड़ियां।
लाल सफेद कमल खिलते लख, खिल जातीं मन कलियाँ।।
केवलज्ञान सूर्य किरणों से, है प्रकाश त्रिभुवन में।
मानस्तंभ पश्चिमी दिश का, पूजूँ रुचि धर मन में।।91।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. देखते ही।

समवसरण में लताभूमि, उपवन में फूल खिले हैं।
जातविरोधी क्रूर पशू, आपस में गले मिले हैं।।
नाम मंत्र प्रभु का जपते, अरि बने मित्र क्षण भर में।
मानस्तंभ उत्तरी दिश का, पूजूँ रुचि धर मन में।।92।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्चिस सौ ब्यालीस[1] वर्ष के, पूर्व विपुल पर्वत पर।
महावीर का समवसरण था, बना यहां अति मनहर।।
भरतक्षेत्र में आज उन्हीं का, शासन इस धरती पर।
मानस्तंभ पूर्वदिश का मैं, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।93।।

ॐ ह्रीं महावीरस्वामिसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर अतिवीर वीर प्रभु, वर्द्धमान जिन सन्मति।
पाँच नाम से आप प्रथित हैं, दीजे मुझको सन्मति।।
समवसरण में आप विराजें, द्वादश गण के ईश्वर।
मानस्तंभ दक्षिणी दिश का, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।94।।

ॐ ह्रीं महावीरस्वामिसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छ्यासठ दिन तक खिरी नहीं ध्वनि, तब सौधर्म सुरेश्वर।
इन्द्रभूति गौतम को लाया, वे ही हुए गणेश्वर।।
समवसरण में तब जन तर्पित, किया धर्म वर्षा कर।
मानस्तंभ पश्चिमी दिश का, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।95।।

ॐ ह्रीं महावीरस्वामिसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. 2512 वीर निर्वाण संवत् अभी (सन् 1986 में जबकल्पद्रुम विधान रचा गया था तब वीर निर्वाण संवत् 2512 चल रहा था) चल रहा है और महावीर स्वामी ने 30 वर्ष की उम्र में दीक्षा लेकर 12 वर्ष तपश्चरण किया था अनंतर केवलज्ञानी 30 वर्ष तक रहे थे। अतः 30+2512=2542 वर्ष पूर्व उन्हें केवलज्ञान हुआ था।

समवसरण की महिमा न्यारी, कह न सके शारद माँ।
लोकोत्तर सम्पत्ति वहाँ पर, लोकोत्तर ही गरिमा।।
ऐसे समवसरण का दर्शन, शीघ्र मिले यह दो वर।
मानस्तंभ उत्तरी दिश का, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।96।।

ॐ ह्रीं महावीरस्वामिसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तम्भचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

चौबीसों तीर्थंकर जिनके, समवसरण में होते।
मानस्तंभ सु चार चार ही, मान पंक को धोते।।
गणधर मुनिगण सुरपति नरपति, खगपति वंदन करते।
मैं पूजूँ पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, पुण्य पूर्ण ये करते।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितषण्णवतिमानस्तम्भचतुरशीति–अधिकत्रयशतजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं समवसरणमानस्तंभस्थितसर्वजिनप्रतिमाभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

परमहंस परमात्मा, परमानंद स्वरूप।
गाऊँ तुम गुणमालिका, अजर अमर पद रूप।।1।।

–शंभु छंद–

जय जय मानस्तंभ चउदिश के, जय जय उन सबकी जिनप्रतिमा।
जय जय मानी का मान हरे, जय सार्थक नाम धरी महिमा।।
प्रत्येक जिनेश्वर ऊँचाई, से बारह गुणे कहे ऊँचे।
ये योजन बीस करें प्रकाश, बारह योजन से ही दीखें।।2।।

इनको घेरे हैं तीन कोट, जो चउ गोपुर द्वारों से युत।
इन कोट अभ्यंतर बावड़ियाँ, उद्यान देवगण से संयुत।।

इन मध्य चतुर्दिक् सोम व यम, अरु वरुण कुबेर जु लोकपाल।
इनके आवास बने सुन्दर, उनमें रमते ये पुण्यशालि।।3।।

बीचों बिच कटनी तीन कही, वैडूर्ण सुवर्ण सु रत्नमयी।
द्वय कटनी पर पूजन सु द्रव्य अठ, मंगल द्रव्य ध्वजादि सही।।
तीजी पर मानस्तंभ खड़े, ये मूल भाग में वज्रमयी।
सर्वत्र फटिक मणि के सुन्दर, ऊपर में हैं वैडूर्यमयी।।4।।

ये मूलभाग में चतुष्कोण, ऊपर तक गोल बने सुन्दर।
इनमें पहलू[1] हैं दो हजार, जिनकी है चमक बहुत मनहर।।
ऊपर में छत्र चंवर घंटा, किंकिणियां रत्नहार शोभें।
चारों दिश आठ सु प्रातिहार्य, अद्भुत शिखरों से अति शोभें।।5।।

चारों दिश जिनप्रतिमायें हैं, जिनके वंदन से पाप टरें।
क्षीरोदधि से जल ला करके, सब सुरगण मिल अभिषेक करें।।
चंदन अक्षत पुष्पादि लिये, सुर नर गण पूजा करते हैं।
सम्यग्दृष्टी बहुभक्ति लिये, जिनगुण स्तवन उचरते हैं।।6।।

पूरब मानस्तंभ के चउदिश, नंदोत्तर नंदा नंदिमती।
नंदीघोषा बावड़ियाँ हैं, कमलों कुमुदों से गंधवती।।
दक्षिण मानस्तंभ चउदिश में, बावड़ियाँ नीर पवित्र भरी।
विजया व वैजयंता रु जयंता, अपराजिता सुनाम धरी।।7।।

पश्चिम मानस्तंभ चारों दिश, बावड़ी अशोका सुप्रबुद्धा।
कुमुदा व पुंडरीका फूले, कुमुदों युत नीर भरी शुद्धा।।
उत्तर मानस्तंभ के चउदिश, हृदयानन्दा सु महानंदा।
सुप्रतिबद्धा अरु प्रभंकरा, वापी जल भरी जनानंदा।।8।।

इन सबमें मणिमय सीढ़ी हैं, द्वय बाजू दो-दो कुंड बने।
इन कुंडों में सुर नर पशुगण, पगधूली धोकर शुद्ध बने।।

1. हरिवंशपुराण, सर्ग 57 श्लोक 16।

इन सोलह वापी का वर्णन, सुरपति भी नहिं कर सकते हैं।
बहु हंस बतख सारस पक्षी, उनमें कलरव ध्वनि करते हैं।।9।।

जिनवर सन्निध का ही प्रभाव, जो मानस्तंभ मान हरते।
यदि सुरपति भी अन्यत्र रचें, नहिं यह प्रभाव वे पा सकते।।
है धन्य घड़ी यह धन्य दिवस, जो पूजन का सौभाग्य मिला।
वह धन्य घड़ी भी मिले शीघ्र, साक्षात् दर्श हो जाय भला।।10।

–दोहा–

जय जय जिनवर बिंब सब, जय जय मानस्तंभ।
'ज्ञानमती' सुख संपदा, भरो हरो जगफंद।।11।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितषण्णवतिमानस्तम्भचतुरशीति-अधिकत्रयशतजिनप्रतिमाभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाँजलिः।

–शेरछंद–

जो भव्य मानस्तंभ का विधान करेंगे,
सम्यक्त्वनिधी पाय वे धनवान बनेंगे।
साक्षात् समवसरण में प्रभु दर्श करेंगे,
कैवल्य ज्ञानमती से, निज सौख्य भरेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा–

तीर्थंकर को नित नमूँ, नमूँ सरस्वति मात।
गौतमादि गणधर नमूँ, नमूँ साधु जग तात।।1।।

कुंदकुंद आम्नाय में, गच्छ सरस्वति मान्य।
बलात्कारगण ख्यात में, हुये सूरि जग मान्य।।2।।

इस युग में चूड़ामणी, शांतिसागराचार्य।
चारित चक्री धर्मधुरि, हुए प्रथम आचार्य।।3।।

इनके पट्टाधीश थे, वीरसागराचार्य।
मुझे आर्यिका व्रत दिया, नाम ज्ञानमति धार्य।।4।।

मानस्तंभ विधान यह, सुंदर रचना जान।
करो करावो भव्यगण, पावो सौख्य निधान।।5।।

जब तक श्री जिनधर्म यह, जग में करे प्रकाश।
तब तक गणिनी ज्ञानमति, कृत विधान सुखराशि।।6।।

इस जग में जिनभक्त के, मन में करे प्रमोद।
मानस्तंभ विधान यह, जग को दे आलोक।।7।।

।इति समवसरणमानस्तम्भविधानं संपूर्णम्।

।जैनं जयतु शासनम्।

समवसरण मानस्तंभ विधान की आरती

–ब्र. कु. इन्दू जैन (संघस्थ)

तर्ज-झुमका गिरा रे.....

आरति करो रे,
श्री मानस्तंभ विधान की सब मिल आरति करो रे,
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे
उनमें राजित सब जिनबिम्बों की आरति करो रे।।टेक.।।

तीर्थंकर के समवसरण की महिमा बहुत बखानी है।
उनमें मानस्तंभ चार दिश, कहतीं माँ जिनवाणी हैं,
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
उस अद्भुत अतिशययुत रचना की आरति करो रे।।श्री मानस्तंभ.।।1।।

मानी का जो मान हरे, वह सार्थक नाम धरें सुन्दर।
जिनवर से बारह गुणिते, स्फटिकमयीयुत हैं मनहर।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
चौबिस जिन के छ्यानवे कहाए, आरति करो रे।।श्री मानस्तंभ.।।2।।

यदि सुरपति अन्यत्र रचें, नहिं यह प्रभाव पा सकते हैं।
योजन बीस प्रकाश करें, बारह योजन से दिखते हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
गणधर, मुनि, सुर नर वन्दे, सब आरति करो रे।।श्री मानस्तंभ.।।3।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने अनुपम पाठ बनाया है।
जिसने ग्रंथ पुराणों का स्वाध्याय 'इन्दु' करवाया है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
उस समवसरण की दर्श आश ले, आरति करो रे।।श्री मानस्तंभ.।।4।।

समवसरण चालीसा

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

-दोहा-

नमन करूँ प्रभु सिद्ध को, सिद्धशिला के नाथ।
अरिहन्तों को भी नमूँ, समवसरण के साथ।।1।।
तीर्थंकर श्री ऋषभ का, प्रथम बना वह धाम।
कहा जिसे संसार में, समवसरण अभिराम।।2।।
समवसरण वैभव वही, कहूँ अंश इक मात्र।
चालीसा माध्यम बने, गुणवर्णन में सार्थ।।3।।

-चौपाई-

समवसरण लक्ष्मी की जय हो, तीर्थंकर प्रकृती की जय हो।।1।।
हों जयवन्त अनन्त चतुष्टय, जय जय प्रभु का वैभव अक्षय।।2।।
तप कर दिव्यज्ञान जब पाते, समवसरण वैभव प्रगटाते।।3।।
धरती से ऊँचे उठ जाते, बीस हजार हाथ तक जाते।।4।।
इन्द्राज्ञा से धनकुबेर तब, रचता समवसरण का वैभव।।5।।
बीस हजार सीढ़ियाँ बनतीं, जिस पर चढ़ जनता नहिं थकती।।6।।
बाल वृद्ध रोगी चढ़ जाते, मिनटों में प्रभुदर्शन पाते।।7।।
चउ परकोटे पाँच वेदियाँ, इनके मधि हैं आठ भूमियाँ।।8।।
धूलिसाल परकोटा पहला, मणियों की रज युक्त सुनहला।।9।।
भूमि चैत्यप्रासाद प्रथम है, जिनदर्शन से कटे विघन हैं।।10।।
पुनः वेदिका है चउतरफी, दूजी भूमि खातिका दिखती।।11।।
उस खाई में फूल खिले हैं, जल में सबके भव दिखते हैं।।12।।
वेदी वेष्टित लताभूमि है, आगे परकोटा स्वर्णिम है।।13।।
उपवन भूमी में चम्पक वन, आम्र अशोक सप्तछद के वन।।14।।
प्रतिवन में इक चैत्यवृक्ष हैं, जिनमें जिनप्रतिमा सम्मुख हैं।।15।।
वेदी आगे ध्वजाभूमि है, महाध्वजा लघु ध्वजा सहित है।।16।।
तीजा रजतमयी परकोटा, पुनः कल्पभूमी की शोभा।।17।।
कल्पवृक्ष दश इनमें दिखते, चार बने सिद्धार्थ वृक्ष हैं।।18।।

उनमें सिद्धों की प्रतिमाएँ, सिद्ध करें सबकी इच्छाएँ।।19।।
वेदी नन्तर भवन भूमि है, जिसमें नव-नव बनें स्तूप हैं।।20।।
अर्हत्सिद्धों की प्रतिमाएँ, कहतीं समवसरण महिमा ये।।21।।
पुनः बना स्फटिक कोट है, अंतिम चौथा वह सुकोट हैं।।22।।
श्रीमण्डप भूमी फिर अष्टम बारह सभा वहीं सुन्दरतम।।23।।
प्रथम सभा में गणधर मुनि हैं, कल्पवासि देवियाँ दुतिय में।।24।।
तीजी में आर्यिका-श्राविका, चौथी में ज्योतिषी देवियाँ।।25।।
व्यन्तर देवी हैं पंचम में, भवनवासि देवी षष्ठम में।।26।।
देव भवनवासी सप्तम में, व्यन्तर देव सभा अष्टम में।।27।।
नवमी में ज्योतिषी देव हैं, कल्पवासि फिर कहे देव हैं।।28।।
ग्यारहवीं में मनुज चक्रि हैं, बारहवीं में सिंह चक्रि है।।29।।
असंख्य प्राणी बैठ सभा में, प्रभु की दिव्यध्वनी को सुनते।।30।।
वेदी नन्तर गंधकुटी है, जिसमें पहले त्रय कटनी है।।31।।
मंगल द्रव्य अष्ट वहाँ शोभें, पहली कटनी उनसे युत है।।32।।
दूजी पर अठ महाध्वजाएँ, प्रभु की कीर्तिध्वजा फहराएँ।।33।।
तीजी कटनी पर सिंहासन, लाल कमल कर्णिका है आसन।।34।।
उससे अधर चार अंगुल पर, ऋषभदेव जी राजे जिनवर।।35।।
चतुर्मुखी ब्रह्मा कहलाते, दिव्यध्वनि ॐकार सुनाते।।36।।
अष्टप्रातिहार्यों से संयुत, शासन देव-देवियों से युत।।37।।
इत्यादिक अनेक वैभव से, शोभित प्रभु का समवसरण है।।38।।
कब साक्षात् दर्श हो उसका, तीर्थंकर के समवसरण का।।39।।
इक दिन ऐसा समवसरण भी बने "चन्दना" मिटे मरण भी।।40।।

-दोहा-

वीर संवत् पच्चीस सौ, चौबिस है विख्यात।
माघ शुक्ल पंचमि तिथी, रचा गया यह पाठ।।1।।
ज्ञानमती गणिनीप्रमुख, की शिष्या अज्ञान।
रचा "चन्दनामति" सुखद, जिनवर का गुणगान।।2।।
चालिस दिन तक जो पढ़े, यह चालीसा पाठ।
समवसरण दर्शन उसे, मन में देगा ठाठ।।3।।

समवसरण की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

चौबीस जिनवर के समवसरण की, मंगलदीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया।

समवसरण के बीच प्रभू जी नासादृष्टि विराजे।
गणधर मुनि नरपति से शोभित, बारह सभा सुराजे।।प्रभु जी....
ओंकार ध्वनि, सुन करके मुनि, रत रहें स्वपर कल्याण में,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।

चार दिशा के मानस्तभों को भी मेरा वंदन।
मिथ्यादृष्टि जिनको लखकर पाते सम्यग्दर्शन।।प्रभु जी.....
करके दर्शन, प्रभु का वन्दन, सम्यक् का हुआ प्रचार है,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।2।।

ध्वजाभूमि के अन्दर देखो, ऊँचे ध्वज लहराएँ।
मालादिक चिन्हों से युत वे, जिनवर का यश गाएँ।। प्रभु जी.....
शुभ कल्पवृक्ष, सिद्धार्थ वृक्ष, से समवसरण सुखकार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।

भवनभूमि के स्तूपों में, जिनवर बिंब विराजें।
द्वादशगण युत श्री मण्डप में, सम्यग्दृष्टि राजें।।प्रभु जी.....
अगणित वैभव, युत बाह्य विभव से, शोभ रहें भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।

धर्मचक्रयुत गंधकुटी पर, अधर प्रभू रहते हैं।
उनकी आरति से ही 'चन्दना' भव आरत टरते हैं।। प्रभु जी.....
प्रभु ऋषभदेव से महावीर तक महिमा अपरंपार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।5।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

तर्ज–सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।टेक.।।

करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।
ऋषभ महावीर इस धरती पर खाए और खेले भी।।
भारत की वसुधा पर तब, स्वर्ग उतर आया था.....स्वर्ग उतर आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।1।।

हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।
तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने।।
इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनमन पाया था।।2।।

आज के इस महाकलियुग में नहिं साक्षात् जिनवर हैं।
तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में।।
सतियों ने इनकी भक्ति करके नाम पाया था-करके नाम पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।3।।

अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।
बीच में ''चन्दना'' देखो प्रभू की गंधकुटी भी है।।
समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था.....शास्त्रों में आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।1।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।2।।

गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।3।।